# श्री श्री मां के द्वारा गीत संगीत

■

१

कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ।
राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष माम् ॥
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण हे ।
राम राघव राम राघव राम राघव राम हे ॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ।
राम राम राम राम राम राम राम हे.....

२

(जय) राधे राधे कृष्ण कृष्ण हरे राम हरे हरे ।
(ऐ नाम) बलो बदने शोनाओ काने बिलाओ जीवेर द्वारे द्वारे ।
(नामे) वाञ्छा पूर्ण हय, अन्ते मोक्ष सुनिश्चय ।
(नामे) त्रिताप ज्वाला याय गो दूरे, शमन भय हरे ॥
(नामे) गोलोकेर हरि, वामे निये श्रीराधा प्यारी ।
युगलरूपे हृदयकूपे सदा विहरे ।
(जय) राधे राधे कृष्ण कृष्ण.....

३

ज्ञेय भगवान ध्येय भगवान प्रेय भगवान श्रेय भगवान ।
ज्ञेय भगवान ध्येय भगवान प्रेय भगवान श्रेय भगवान ॥





हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान ।
हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान ॥
मंगलमय हे भगवान प्रेममय हे भगवान ।
प्राणमय हे भगवान आनन्दमय हे भगवान ॥
हे भगवान हे भगवान.....

४

भजो रे भैया राम गोविन्द हरे ।
जप तप साधन कछु नहि लागत खरचत नाहि गठरी ॥
सन्तत सम्पद सुख के कारण जासु भूल पड़ि ।
कहत कबीर राम न जा मुख ता मुख धूलभरी ।

५

जय राम श्रीराम जय जय राम ।
जय राम श्रीराम जय जय राम ॥

६

रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम ।
जयतु शिवाशिव जानकी राम जय रघुनन्दन जय सीताराम ।
रामराम रामराम रामराम रामराम ।
रामराम रामराम रामराम प्राणाराम ॥
रामराम प्राणाराम रामराम प्राणाराम ।
प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम सीताराम ॥
सीताराम (जय) सीताराम सीताराम (जय) सीताराम ।
(जय) सीताराम (जय जय) सीताराम (जय) सीताराम ।
(जय जय) सीताराम ॥

७

धरो लओ धरो लओ लओ रे किशोरीर प्रेम
निताइ डाके आय।
निताइ डाके आय आय गौर डाके आय।
(प्रेमे) शान्तिपुर डुबु डुबु नदे भेसे याय
धरो लओ धरी लओ.....
(प्रेम) कलशे कलशे ढाले तबु ना फुराय।
(प्रेमे) पाड़ भाडिये ढेउ लागिलो गोरा चाँदेर गाय।
धरो लओ धरो लओ.....
(प्रेम) नित्यानन्द गौरचन्द्र आपनि बिलाय।
(प्रेम) ये यतो चाय से ततो पाय तबु ना फुराय।
धरो लओ धरो लओ.....

८

हरिबोल हरिबोल हरि हरि बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल॥

९

सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म।
शान्तम् शिवम् अद्वैतम् ब्रह्म॥
आनन्दरूपम् अमृतम् यद् विभाति।
एकमेवाद्वितीयम् ब्रह्म॥

१०

के रे ए नूतन योगी एलो नदेर माझारे।
मरि कि रूप-माधुरी पागल करिलो मोरे।





योगीर मुखेते ओ कि मधुर ध्वनि,
आमि आर ना शुनि ऐमन ध्वनि,
ये ध्वनि शुनिया धनी सुरधुनी उजान धरे।
कैशोर वयसे मरि ओ कि रूप-माधुरी,
(से ये) कौपीन-करङ्गधारी होयेछे रे ब्रह्मचारी।
ना जानि कार प्रेमेर तरे॥

(देखलेम) 'रा' बलिते नयन झरे,
'धा' बलिते धूलाय पड़े,
(से ये 'राधा' 'राधा' बलते नारे)
ऐमन देखि नाइ आर त्रिसंसारे॥

आमार होलो ए कि बलो बलो सखी,
योगीर रूप देखिये मुग्ध आँखि।
(आमार) प्राणपाखी पोड़ेछे बाँधा,
बाँधा पोड़ेके जनमेर तरे॥

(बाँधा पोड़ेछे पोड़ेछे) (योगीर प्रेम-पिञ्जरे बाँधा.....)
(प्रणपाखी आर उड़ते नारे, बाँधा.....)
(आमार गृहे येते पा ना सरे, बाँधा.....)
आमि योगीर पदे प्राण सँपेछि,

---

(१०) माँ के अष्टग्राम रहते समय यह गाना दूर से कोई गा कर चला गया। उसके बाद से ही माँ इस गाने को गाती हैं। कैसी आश्चर्य की बात—दूर से केवल एक बार सुनकर आँखर (कीर्तन में जो पद मूल संगीत के साथ इच्छानुसार जोड़ दिया जाता है उस) के साथ समूचा गाना माँ के खयाल में रह गया!

(गृहे याबो ना, याबो ना) एइ तो बाहिर होयेछि,
गृहे याबो ना, याबो ना।
(आमि योगीर सङ्गे ये याबो) (कारो बाधा मानबो ना गो)
(आमि द्वारे द्वारे मेगे खाबो, आमि योगीर सङ्गे ये याबो)
(आमि सङ्गेर साथी होये थाकबो, आमि योगीर सङ्गे ये याबो)

११

हृदय-दुआरे आजि के डाकिलो।
काहार मधुर वाणी शुनिलाम·····ओ, ओ कि शनिलाम।
शुनिलाम, शुनिलाम-ओ शुनिलाम-ओ।

शुनिया से वाणी तार—
(घरे) रहिते ना पारि आर,
हृदय व्याकुल आजि होइलो, होइलो, होइलो·····ओ·····
(आमाय) घरेर बाहिर आजि कोरिलो, कोरिलो, कोरिलो·····ओ···
मोह मदिरा पिये
(आमि) अचेतने छिनु शुये
के आजि आसिया मोरे जागालो, जागालो, जागालो····ओ····

१२

आय सबे मिलि, बाहु दुटि तुलि
हरिगुणावली गाइ रे।
गाहिते गाहिते नाचिते नाचिते
आनन्दधामेते याइ रे।





पिक-शुक-सने मिलाइया तान
अलिकुल सने माताइया प्राण
आय सबे करि हरिगुणगान
कोथा के रहिलि भाई रे।

(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

समीरण सने दिगन्त व्यापिया
तरुकुल सने काँदिया काँदिया
गाओ हरिनाम जीवे जागाइया
समय बहिया याय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

राङा भानु सने मिलिया मिशिया
कमल-चरण-युगल चुमिया
चिदानन्द धने हृदये लइया
सदानन्दे थाकि भाई रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

(ताँरे) देह-प्राण-मन देहो रे ढालिया
लहो रे ताँहारे आपन करिया
भवपारे याबे हासिया हासिया
बसिया दयालेर नाय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

चौदिके छाइया उठियाछे रोल

'हरि हरि बोल,' 'बोल हरि बोल'
ओइ शोन आबार किसेर गण्डगोल
निताइ बुझि डेके याय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

१३

हरि बोल हरि बोल हरि बोल बोले
के रे ऐमन नाचे गाय?
ध्वनि कि मधुर शोना याय।
काल गियेछे यारा माधाइ
एसेछे कि तारा दुभाई
आज कैनो नामे मिठा पाइ
शुने तापित प्राण जुड़ाय।

एइ हरिनाम शुनि कतो
मने तो धरे ना एतो
आज कैनो नाम मन्त्रेर मतो,
अन्तरे पशिलो साधाइ।

शुनेछि भाई काङ्गाल पेले
गौर-निताइ याय रे चोले
आय तबे याइ दुभाई मिले
पड़िगे दुइ भाइयेर पाय।

पापेर बोझा दूरे फेले
दुभाई निबो दुभाई कोले
नाचबो गाबो हरिबोल बोले
भय कि रे शमनेर दाय।





हरि नामे दिये साड़ा
डेके आय भाई सकल पाड़ा।
(भव) पारेर वाञ्छा करे यारा
तादेर तो एइ समय याय।

ऐमन दयाल गैले चोले
"पार करो पार करो बोले"—
काँदते हबे भवेर कूले
समय गैले के आर पाय।

कि जानि प्रेम कारे बले
ता नाकि भाई नामे फले
(दयाल) गौर-निताइयेर शरण निले
से धन नाकि पाओया याय।

ये आनन्दे दु'भाई नाचे
से आनन्द प्रेमे (नामे) आछे
ऐमन सुजन थाकते काछे
से धन कैनो हाराइ हेलाय।
ध्वनि कि मधुर शोना याय।

१४

हरि बोल मन निकटे शमन याबे जीवन रबे ना।
डाकार मतो कोरे यदि डाको तारे
(तबे) शमने समन जारि कोरबे ना।
यदि थाके पुँजी माझी हबे राजी
अन्य कथा आर शुधाबे ना।

भाई-बन्धु यतो दु'-चार दिनेर मतो—
सङ्गेर साथी केउ हबे ना।
रविसुत एसे बेन्धे निबे कसे
कारो कथा आर शुनबे ना।
ईशान बले भाई आर तो समय नाइ
राधा-गोविन्द नाम भुलो ना।
(आमि) यखन या करि यात्राकाले हरि
श्री-हरिर नाम यैनो भुलो ना॥

१५

राधा मम प्राण — राधा मम ज्ञान।
राधा मम ध्यान — राधा नाम सार।
प्रेममयी राधा — राधा अङ्गे आधा।
राधा नाम साधा — बाधा नाहि तार।
आमि दिवस रजनी — राधा नाम ध्वनि।
करि, मात्र जानि — राधा मूलाधार।
राधा आद्या शक्ति — राधा भक्ति-मुक्ति।
राधा अनुरक्ति — भक्त श्रीराधार।
श्रीराधिका यन्त्रे — दीक्षा राधा मन्त्रे।
करि बाँसी यन्त्रे — नय रन्ध्रे फुत्कार।
से तन्त्रे सा-रे-गा-मा — पा-धा-नि सप्तमा।
आलाप संयमे — बाजे सहस्रार।





१६

**राधा—** ओ मा नन्दराणी, तोर नीलमणिर जन्ये की
गोकुल छाड़िबो ?

से या मने लय ताइ करे,
किछुइ कभी ना तारे।
ऐमन देखि ने आर जगत् जुड़े,
(मा तोर कानाइयेर मतो) से कि तोर ऐतोइ आदुरे !
मा तोर डरे डरे आर कतो बा सबो ?
मागो, भाण्ड-भरा ननी छिकाय तोला थाके,
कि जानि कइ थेके, कैमन कोरे दैखे,
यखन घरे केउ ना थाके, ढुके सेइ फाँकि,
यतो खाय आर ततो छड़ाइया राखे,
यदि केउ बा कखन दैखे, ताड़ा दैय मा ताके।
करे भाण्ड भेङ्गे कतो उपद्रव।

**नन्दराणी—** राखे, सात नय, पाँच नय, आमार ऐका नीलमणि
ऐक मुखे कतो खाबे क्षीर-ननी (ता कि जान ना, जान ना)
(आमार गोपाल ये की साधनार धन, ता कि·····)
(कतो आराधना करे, पूजे महेश्वरे, गोपाल-धने कोले
पेयेछि गो)

(आमार आर ये लक्ष्य नाइ गो राधे)
(आमारे मा बले प्राण शीतल करे)
घरे कतो आछे, तबु तोदेर काछे
कैनो गिये याचे किछुइ ना जानि।

(या होक) अबोध बाछाधने मारिस् ने धरिस् ने।
(तारे कटु कथा बलिस ना गो)
तोदेर ननीर कड़ो सकल गुणे दिबो।

राधा— मागो, ननीर क्षति बरं कड़ी दिले सारे।
आरो कतो करे कि कबो तोमारे
आमरा थाकि घरे, से याय वनान्तरे।
'राधा' 'राधा' बोले बाँशरी पुकारे।
(तार) से मुरली स्वरे केउ ना रइते पारे,
(बाँशी बाजाय कतो भक्ति करे) शुने यमुनार जल
उजान घरे)

(बल मा) आमरा कैमन कोरे कुल राखिबो।
नन्दराणी— राधे, बाँशी बाजाय कानाइ, बलै 'दादा' 'दादा'
तुमि शुनले शुनते पारो, 'राधा' 'राधा'!
(यखन तार बलाई दादा दूरे थाके
'दादा' 'दादा' बोले डाके)

(आर) ना हय मैने निलेम, बलै बरं 'राधा'
गुरुजनेर नाम निते कि बा बाधा।
(मिछे) सादा मने कादा लागाओ कैनो राधा,
किसे बिना दोषे तारे बाधा दिबो।

राधा— मागो, एकटि दुटि नय, कि कबो तोमारे
मोदेर सने कानाइ कतो काण्ड करे,
आमरा याइ तोमारे दधि बेंचिबारे।
पार-घाट थेके से पाटुनीर काज करे।
(भाङा) नाये भरा भरे डुबाव से साँतारे





भये आमरा काँदि कतो उच्चैस्वरे,
देखे तोमार कानाइ कतो रङ्ग करे,
शेषे कि कानाइयेर हाते पड़े प्राण हाराबो?

नन्दराणी— राधे, कतो घाट कतो नेये माझी आछे,
सबु कैनो सबे याओ कानायेर काछे?
(ऐका) तारे दोषो मिछे, तोदेर इच्छा आछे।
नइले कैनो ऐतो लेगेछो तार पाछे?
(कैनो) भालो डिङा थुये ओठो भाङा नाये।
(तारे) कि दोष देखाइये मन्द कबो!

राधा— मागो, आर ऐक दिनेर कथा कइते नाहि सरे,
नाइते गैलाम सबे वसन रेखे पारे,
कानाइ चक्र करे से सब निये हरे,
कदम गाछे चड़े कतोइ व्यङ्ग करे।
(आमरा) दाँड़ाये करजोड़े कतो विनय करि तारे,
तबे बसन दिलो पेड़े तोर केशव।

नन्दराणी— राधे, आइ मरि छि छि, एकि लाजेर कथा,
मुख तुले ताइ (आबार) बलते एलि हेथा।
कुलवधू हये लाजेर माथा खेये
कूले वसन थुये के बा नाय बलो कोथा?
(भाग्ये) कानाइ राखलो तुले, भये दिलो फेले,
(कानाइ शिशुमति दुधेर छेले)
अन्ये वसन निले बलो कि ये हतो!
(तोदेर) जाति-कुल-मान कोथाय बा रहितो।

(राख) राई, जटिलारे पेले बले देबो।
(तोदेर घटार कथा)।

राधा— मागो, पाये पड़ि हाते धरि शत बार,
तोमार काछे कये ऐके हलो आर।
थाक् कानाइयेर साधा, मोदेर बाँचा भार,
जा होंक तारे किछु बलो नाको आर।
(मा तोर) कानाइ यैनो याय निति निति पाड़ाय,
(तबु) जटिलारे बलिस ने गो, के कि बलबे ताय।
मा, से यतो खेते चाय, तारे खावाइबो।
(मा, तोर कानाइ ऐका कतो बा खाय!)

■